Devi Ahilya Vishwavidyalaya , Indore

CELEBRATION@DAVV - Sfoorty sports

CELEBRATION@DAVV - Sfoorty cultural

DAVV NEWS

• अगस्त 2015

Yoga for Harmony & Peace

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

(नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्रत्यायित)

इंदौरी रोबोट केविन ने की आरती, गेस्ट को बुके दे किया वेलकम

डीएवीवी आइइटी में स्टूडेंट्स का बनाया रोबोट लॉन्च

पत्रिका रिपोर्टर

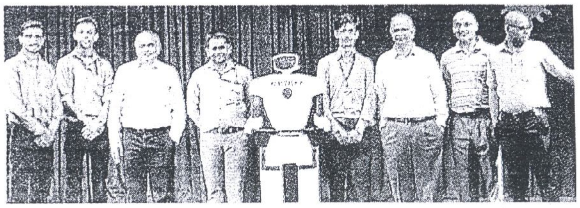

इंदौर. डीएवीवी ऑडिटोरियम में मौजूद सैकड़ों स्टूडेंट्स उस वक्त हैरान रह गए, जब उन्होंने एक रोबोट को स्टेज पर आते देखा। रोबोट ने पहले माता सरस्वती को फूल अर्पित कर आरती की और फिर गेस्ट को बुके भी भेंट किया। दरअसल यह रोबोट केविन है, जिसे डीएवीवी के इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आइइटी), मेडिकेप्स कॉलेज के स्टूडेंट्स व रोबोट्रोनिक्स इंडिया के भूपेंद्र सिंह ने मिलकर तैयार किया है। भूपेंद्र सिंह के मुताबिक केविन एक सर्विस रोबोट है, जो इलेक्ट्रॉनिक टेक्नोलॉजी पर आधारित है। यह आवाज, इंटरनेट, ब्लूटूथ से कंट्रोल हो सकता है। मोबाइल ऐप से दुनिया में कहीं से भी संचालित किया जा सकता है। बेंगलुरु के एक रेस्त्रां में रोबोट्स कस्टमर्स को सर्विस देते हैं। वे खाना सर्व करते हैं, ऑर्डर भी लेते हैं। इन्हें देखकर केविन को तैयार करने का आइडिया मिला।

होम सर्विस में यूज होगा

भूपेंद्र ने बताया कि केविन बुलाने पर पास आएगा तो चले जाने का कहने पर दूर हो जाएगा। उन्होंने बताया, फ्यूचर एप्लीकेशन देखें तो यह होम सर्विस में यूज होगा। होम ऑटोमेशन का कंट्रोल करने के साथ-साथ स्विच ऑफ एंड ऑन कर सकता है।

समय 4 माह, खर्च 40 हजार रुपए

रोबोट पूरी तरह से मेड इन इंदौर है। इसे बनाने में 4 माह का समय लगा और खर्च 35 से 40 हजार रुपए। भूपेंद्र बताते हैं कि अन्य सर्विस रोबोट्स की तुलना में यह काफी सस्ता है। मार्केट में इसकी कीमत 1 से 4 लाख रुपए तक होती है।

Institute of Management Studies, DAVV

Personal Enrichment Task Force and MBA FT invite Parents and Teachers

Date - 1 November 2018

Venue - IMS Auditorium

Timings - 11:00 a.m. onwards

Student led conference on Learning Management from Indian Scriptures

शास्त्रों से प्रबंधन के गुर सीख कहा- बिज़नेस की भी लक्ष्मण रेखा है, पार की तो नुकसान तय

भारतीय शास्त्रों-ग्रंथों से मैनेजमेंट लर्निंग्स सीख शेअर की आईएमएस स्टूडेंट्स ने

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

वन में स्वर्ण मृग पकड़ने के दौरान जब लक्ष्मण ने भ्राता राम की आवाज़ में अपने नाम की पुकार सुनी तो उन्होंने जाने से पहले कुटिया के बाहर लक्ष्मण रेखा खींची। सीता से कहा इसे पार न करें। लेकिन साधु के वेश में आए रावण को भिक्षा देने के लिए वो रेखा लांघ गई और रावण ने उनका हरण कर लिया। आज के दौर में ये प्रसंग सिखाता है कि नियमों के परे गए तो नुकसान तय है। और कॉर्पोरेट्स के लिए ये बहुत बड़ी सीख है।

सदियों पहले लिखे गए रामायण, महाभारत, भगवद् गीता और गुरु ग्रंथ साहेब जैसे शास्त्रों में उल्लेखित नीतियां, घटनाएं, दर्शन आज भी प्रासंगिक हैं इसकी तर्कसम्मत जानकारी डीएवीवी के इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के स्टूडेंट्स को स्टूडेंट्स ने ही दी। गुरुवार को हुए इस कार्यक्रम में स्टूडेंट्स के 24 ग्रुप्स ने ऐसे पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से मैनेजमेंट की लर्निंग्स दी।

भरत मिलाप प्रसंग

भगवान राम के चित्रकूट में होने की जानकारी भरत को लगी तो वे वहां जाकर राम से लौट चलने को कहते हैं। राम पिता को दिए वचन का मान रख साथ जाने से इंकार कर देते हैं।

सीख : काम, जिम्मेदारी और वादों के प्रति कमिटेड रहिए। नारायण मूर्ति 2011 में इन्फोसिस से रिटायर हुए। उनके जाते ही कंपनी घाटे में जाने लगी। 2013 में बतौर एक्जीक्यूटिव चेयरमैन दोबारा जिम्मेदारी ली और कंपनी को उन्हीं ऊंचाइयों पर ले गए।

राम सेतु निर्माण प्रसंग

सेतु निर्माण के दौरान भगवान राम की सेना में शामिल हरेक प्राणी ने अपनी योग्यता के अनुसार काम किया और पानी पर पत्थरों से सेतु बनाने के कारनामे को अंजाम दिया।

सीख : मिलकर काम करने से सफलता जल्दी मिलती है। फायज़र कंपनी भी एक समय बंद होने को थी लेकिन की होंग ने कर्मचारियों के साथ मिल काम किया और कंपनी को दोबारा उसी पोजीशन में ले आईं।

ये चार यज्ञ भी हमें सहज ही बहुत कुछ सिखाते हैं

ब्रह्मयज्ञ : ईश्वर का ध्यान करना ही ब्रह्मयज्ञ है। इसे सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी से जोड़ते हुए स्टूडेंट्स ने बताया हम भगवान की पूजा इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने मनुष्यों को बनाया है। बिज़नेस बनाने वाली सोसायटी होती है। वो किसी भी बिज़नेस को बड़ा या छोटा कर सकती है। हर कॉर्पोरेट को सीएसआर के ज़रिए सोसायटी और पर्यावरण का ऋण चुकाना चाहिए।

पितृयज्ञ : जीवित माता-पिता, गुरुजन व बड़ों की सेवा और आज्ञापालन पितृयज्ञ है। इस तरह कंपनी के पिता उसके ओनर होते हैं। जब भी कंपनी का प्रॉफिट होता है तो उसका पहला शेयर ओनर्स को मिलना चाहिए। कंपनी की रेपुटेशन बढ़ेगी तो सबका मान बढ़ेगा।

अतिथियज्ञ : घर आए अतिथि, विद्वान, धर्मात्मा, संत-महात्माओं का सत्कार कर उनसे ज्ञान प्राप्त करना अतिथियज्ञ है। कॉर्पोरेट वर्ल्ड में इंटर्न्स अतिथि की तरह हैं। उन्हें यथोचित सम्मान और सैलरी दी जानी चाहिए क्योंकि वे कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए काम करते हैं। उनका ऋण चुकाना चाहिए।

बलिवैश्वदेव यज्ञ : पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही बनाए हैं। इन पर दया करना और इन्हें खाना खिलाना बलिवैश्वदेवयज्ञ है। ये सस्टेनेबल डेवलपमेंट की सीख देता है ताकि किसी जीव को नुकसान न पहुंचे।

आइएमएस में महाभारत, रामायण, गुरुग्रंथ साहिब के जरिए स्टूडेंट्स ने पैरेंट्स के सामने दिया प्रजेंटेशन

हमारे शास्त्र किसी हॉर्वर्ड, कैम्ब्रिज से कम नहीं, मैनेजमेंट के बेस्ट फंडे हैं इनमें

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ भीष्म पितामह महाभारत के मुख्य किरदारों में से एक थे, इसके बावजूद उन्हें आज कोई याद नहीं करता। वे अपनी रूढ़ीवादी सोच पर ही अडिग रहे। खुद को बदलने की कोशिश नहीं की। ऐसा ही कुछ मोबाइल कंपनी नोकिया के साथ भी हुआ। दुनिया बदलती गई, सैमसंग, माइक्रोमैक्स फिर आइफोन और एंड्रॉयड स्मार्टफोन आए, नोकिया अपने पुराने कलेवर पर ही अटका रहा। लोगों की पसंद बदली, लेकिन कंपनी ने अपने आप को नहीं बदला। इसका खामियाजा यह रहा कि नोकिया अब लोगों के हाथों से गायब हो गया। इससे ये सीखने को मिलता है कि समय के साथ बदलेंगे, तभी मार्केट में बने रहेंगे।

यह विचार डीएवीवी की इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज में हुए भारतीय शास्त्रों से मैनेजमेंट के गुर विषय पर हुई कॉन्फ्रेंस में स्टूडेंट्स ने रखे। कॉन्फ्रेंस की खास बात यह रही कि स्टूडेंट्स के प्रजेंटेशन सुनने के लिए पैरेंट्स भी आइएमएस ऑडिटोरियम में मौजूद थे। कंपनी में छोटे से छोटे कर्मचारियों को प्रेरित करने की जरूरत को रामसेतु निर्माण में गिलहरी के योगदान के जरिये समझाया। आइएमएस डायरेक्टर डॉ. संगीता जैन भी मौजूद थी। प्रोफेसर डॉ. यामिनी करमारकर ने बताया कि जब भी मैनेजमेंट की बात होती है तो हम वेस्टर्न मॉडल व थिंकर की ही बात करते हैं, लेकिन हमारे भारतीय शास्त्र आज भी प्रासंगिक हैं, इसलिए स्टूडेंट्स को हमारे ग्रंथों से लर्निंग उठाने और वर्तमान परिदृश्य के हिसाब से प्रासंगिकता साबित करने के लिए मोटिवेट किया।

स्टूडेंट्स को मिली तीन सीख

टीम वर्क : पहली बार कॉलेज में कोई कॉन्फ्रेंस पूरी तरह से स्टूडेंट्स लेड थी। उन्होंने खुद ही टीम बनाई, रिसर्च किया और टॉपिक चयन कर इसे अंजाम पर पहुंचाया। टीम वर्क सीखने को मिला।

थीम : किसी भी इवेंट को सक्सेस बनाने के लिए एक थीम जरूरी होती है, इसलिए स्टूडेंट्स की टीम ने लर्निंग मैनेजमेंट फ्रॉम इंडियन स्क्रिप्चर्स टॉपिक का चयन कर क्रियान्वित किया। यह उन्हें मुश्किल समय में एक मार्ग दिखाएगा।

इमोशनल अटैचमेंट : युवा पीढ़ी पैरेंट्स को सोशल व प्रोफेशनल लाइफ में इन्वॉल्व करना पसंद नहीं करती, लेकिन यहां पैरेंट्स के सामने स्टूडेंट्स ने परफॉर्म किया। इमोशनल कनेक्शन हुआ।

स्टूडेंट्स ने ग्रंथों से ऐसे किया रिलेट

रामायण : एमबीए एफटीए स्टूडेंट श्रेया ने रामायण और कॉरपोरेट वर्ल्ड पर कहा, भगवान राम की प्रतिबद्धता सबसे बड़ा सक्सेस मंत्रा है। अपने वचन के कारण राज-पाट छोड़ 14 साल का वनवास लिया। इंफोसिस फाउंडर नारायण मूर्ति कमिटमेंट के कारण ही रिटायरमेंट के बाद भी दोबारा कंपनी में लौटे। हम कभी मां सीता की तरह नैतिक दुविधा में फंस जाते हैं। सीता लक्ष्मण रेखा पार करने से पहले सोच रही थी, अगर पार की तो लक्ष्मण नाराज हो जाएंगे और नहीं की तो साधु का शाप हानि पहुंचाएगा।

पंचमहायज्ञ : ब्रह्मा यज्ञ, तर्पण पितृ यज्ञ, हवन देव यज्ञ, पंचबलि भूत यज्ञ और अतिथियों का पूजन-सत्कार अतिथि यज्ञ हमारे ग्रंथों में पंच महायज्ञ के रूप में स्थापित हैं। इन्हीं पंच महायज्ञों के आधार पर व्यापार की सामाजिक जिम्मेदारी समझाई है। एमबीए एफटी फर्स्ट इयर के छात्र पुष्पेंद्र ने कहा कि हर बिजनेस की समाज, अपने लोगों, देश, पशु-पक्षी, प्रकृति के लिए नैतिक जिम्मेदारी होती है। इन्हें ध्यान में रखकर कोई भी काम किया जाए तो असफलता नहीं मिलेगी।

गुरु पर्व : एमबीए एफटी फर्स्ट इयर स्टूडेंट हर्षदीपसिंह गुर ने गुरु पर्व के जरिये मैनेजमेंट के बेसिक फंडे समझाए। उन्होंने कहा कि हम सबसे पहले फोरकास्टिंग करते हैं कि पर्व में कितने लोगों के आने की संभावना है। इसी आधार पर प्लानिंग होती है। फिर इसी संख्या के आधार पर लंगर का प्रसाद बनता है। यह ऑर्गनाइज तरीके से होता है। बिना ब्रेक अखंड पाठ होता है। इसके लिए भी प्लानिंग होती है। इसी तरह बिजनेस में भी हर चीज फोरकास्टिंग, प्लानिंग और ऑर्गनाइज तरीके से हो तो सक्सेस मिलती है।

पांडवों जैसी सही स्ट्रेटेजी अपनाकर ही जियो कम कस्टमर बेस के बाद भी सफल हुआ

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

डीएवीवी में लर्निंग मैनेजमेंट फ्रॉम इंडियन स्कल्पचर्स विषय पर सम्मेलन

मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए हम हजारों किताबें पढ़ते हैं। विदेशों में पढ़ने जाते हैं जबकि मैनेजमेंट के सबसे अच्छे सिद्धांत हम अपने शास्त्रों, ग्रंथों, पुराणों से ही सीख सकते हैं। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के आईएमएस विभाग में गुरुवार को स्टूडेंट्स ने ऐसे ही कई सिद्धांत हमारे सामने प्रस्तुत किए जो आज भी प्रासंगिक हैं। यहीं से हम टीम भावना, समन्वय, मेलजोल सब कुछ सीख सकते हैं।

कई बार हमें नैतिक द्वंद्व की स्थितियों का सामना करना पड़ता है। रामायण में भी इसी वजह से सीता ने लक्ष्मण रेखा पार की और रावण द्वारा अपहरण कर लिया गया। कॉरपोरेट जगत में भी अगर आप कंपनी की नीतियों के विरुद्ध जाते हैं तो उसके दुष्परिणाम भुगतना पड़ते हैं। इसी तरह के कई प्रासंगिक उदाहरण 24 टीमों ने प्रस्तुत किए। हर टीम में 5 सदस्य थे और सभी को 3 से 5 मिनट का समय दिया गया था। स्टूडेंट्स पिछले एक महीने से इसकी तैयारी कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने रामायण, महाभारत के अलावा भगवद्गीता, विष्णु पुराण, कुरान, चाणक्य नीति, मनुस्मृति का विस्तार से अध्ययन किया था।

श्रीकृष्ण जैसा कूटनीतिक मैनेजर कोई नहीं हो सकता। उनकी मैनेजमेंट स्किल्स कमाल की थीं। दुश्मनों का किस तरह से मुकाबला करना है वो सीखना चाहिए। पल्लवी जैन और टीम ने बताया कि पांडवों के पास सेना कम थी, लेकिन सही रणनीति की वजह से उन्होंने कौरवों पर जीत दर्ज की। जिस तरह जियो कंपनी ने सही रणनीति के तहत कम कस्टमर बेस होने के बाद भी टेलिकॉम की दूसरी कंपनियों को काफी पीछे छोड़ दिया।

हितोपदेश में मित्रलाभ को समझाने के लिए उन्होंने ईमामी कंपनी की सफलता का जिक्र किया। इस कार्यक्रम में ऑडियंस के रूप में स्टूडेंट्स के पेरेंट्स आए थे। विभाग की निदेशक संगीता जैन ने कहा अक्सर पेरेंट्स को यह जानकारी नहीं रहती कि बच्चे कॉलेज में क्या सीख रहे हैं। बच्चे को सही रास्ता दिखाने और सक्षम व्यक्ति बनाने में पेरेंट्स और संस्थान दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इस दौरान करिकुलम को बेहतर बनाने के लिए भी पेरेंट्स की प्रतिक्रिया जानी गई।

प्रवाह 2015

स्मारिका-राष्ट्रीय युवा उत्सव

30th Inter-University National Youth Festival 2015

hosted by **Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore**

under the aegis of **Association of Indian Universities (AIU)**

Sponsored by **Ministry of Youth Affairs and Sports, Govt. of India**

NATIONAL YOUTH FESTIVAL | 12 FEB-2015

राष्ट्र की अखंडता का संदेश देगा युवा उत्सव : सैमसन डेविड

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव २०१५ के लिए पूरी तरह से तैयार है। युवा महोत्सव में देश भर से करीब ७० प्रमुख विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भाग लेंगे। इस महोत्सव का आयोजन भारतीय विश्वविद्यालय संघ एवं

युवा कार्यक्रम तथा खेल मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। युवा महोत्सव के ३० वर्षों के इतिहास में यह पहला मौका है जब मध्यप्रदेश के किसी विश्वविद्यालय को इसके आयोजन की मेजबानी मिली है। युवा महोत्सव के उद्देश्यों, कार्यक्रम के स्वरूप एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को मिली इसकी मेजबानी पर भारतीय विश्वविद्यालय संघ के संयुक्त सचिव डेविड सैमसन ने प्रवाह संवाददाता से अपने विचार साझा किए। इस बार के युवा महोत्सव की मेजबानी देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह के नवाचारी प्रयासों से मिली है। डेविड सैमसन ने बताया कि राष्ट्रीय युवा महोत्सव २०१५ में देश भर से आएं युवाओं के लिए एक सुनहरा अवसर एवं शानदार अनुभव होगा, ऐसी मेरी आशा है। यह महोत्सव एक ऐसा प्लेटफार्म होगा जहां वो अपनी कला का प्रदर्शन कर सकते हैं और खास बात यह है कि यहां उनको विविध संस्कृतियों को देखने का मौका मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह युवा उत्सव समानता और राष्ट्र की अखंडता का संदेश देगा। युवा अपने अंदर निहित उर्जा के जरिए संपूर्ण राष्ट्र को एकता एवं अखंडता, भारतीय मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति का संदेश दे सकते हैं। इस वर्ष राष्ट्रीय युवा महोत्सव को आयोजित करने का अवसर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को दिया गया है जो विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय होगा साथ ही विश्वविद्यालय के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

- सृष्टि सावंत

सांस्कृतिक वैभव से संपन्न शहर - इंदौर

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर द्वारा यह वर्ष स्वर्ण जयंती के रूप में भी मनाया जा रहा है। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर को भारतीय विश्वविद्यालय संघ नई दिल्ली ने ३०वें राष्ट्रीय अंतर-विश्वविद्यालयीन युवा उत्सव २०१५ को आयोजित करने के लिए चयनित किया है। यह भी उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय एकमात्र 'ए' ग्रेड प्राप्त राज्य विश्वविद्यालय है। यह इस विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। भारतीय कला एवं संस्कृति की समृद्ध परंपरा से युवाओं को जोड़े रखना, इस तरह के युवा उत्सवों का मुख्य उद्देश्य होता है। इंदौर सांस्कृतिक वैभव से संपन्न शहर है। यह सुर कोकिला लता मंगेशकर, सलमान खान जैसे कलाकारों की जन्म स्थली है। प्रसिद्ध पार्श्व गायक किशोर कुमार की शिक्षा भी इसी शहर में हुई है। सिनेमा जगत के कई कलाकार इस शहर की माटी से जुड़े हुए हैं तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाए हुए हैं।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर द्वारा १२ से १६ फरवरी २०१५ तक ३०वें राष्ट्रीय अंतर विश्वविद्यालयीन युवा उत्सव 'प्रवाह' का आयोजन किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आयोजन में ५ जोन के

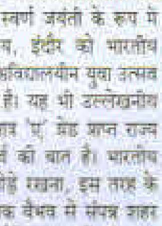

लगभग ७० विश्वविद्यालय भाग लेंगे। प्रत्येक विश्वविद्यालय से राष्ट्रीय युवा उत्सव में नाट्य, संगीत, नृत्य साहित्य आदि क्षेत्रों की लगभग २४ विधाओं के प्रतियोगी प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। इस महत्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन के सभी प्रतिभागी छात्र-छात्राओं, संगतकारों, दल प्रबंधकों, निर्णायक मंडल व अन्य सभी विशिष्ट सम्माननीय अतिथियों का इस भव्य आयोजन में मैं स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं एवं यह एक सफल आयोजन हो, ऐसी कामना करता हूं। - डॉ. बी.के. त्रिपाठी, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण विभाग

ऊंची उड़ान को तैयार हम...

कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह से सृष्टी अमिता की बातचीत

■ ***आज के संदर्भ में युवा उत्सव की उपयोगिता क्या है?***

मुझे लगता है कि आज के युग में युवा उत्सव की उपयोगिता अधिक है, क्योंकि युवा उत्सव न केवल हमारे जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार करता है वरन् इस ऊर्जा को एक सही मंच भी प्रदान करता है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों को एक स्थान पर लाकर आपस में समरसता, समतुल्यता और सहजता का भाव पैदा करते है। साथ ही साथ ये उत्सव हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

■ ***देवी अहिल्या विश्वविद्यालय पर राष्ट्रीय युवा उत्सव की बड़ी जिम्मेदारी है, इसे आप किस रूप में देखते हैं?***

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत बड़ा अवसर और चुनौती दोनों है। मैं इसका स्वागत करता हूं। यह देवी अहिल्या विश्वविद्यालय का सौभाग्य है कि भारतीय विश्वविद्यालय संघ व भारत सरकार के

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा यह महती जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह चुनौतीपूर्ण इसलिए है, क्योंकि संपूर्ण भारत से करीब ७० विश्वविद्यालयों के लगभग १००० विद्यार्थी इस कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। इन सभी के आवास, भोजन एवं यातायात की व्यवस्था तथा पूरे कार्यक्रम को सुचारू रूप से संपन्न कराने का दायित्व हम पर है। ५ मुख्य गतिविधियों एवं २४ विधाओं में प्रतियोगिता का आयोजन होगा, जिसके लिए विश्वविद्यालय ने पूरी तैयारियां की है। विभिन्न समितियों का निर्माण कर कार्यों का विभाजन किया गया है। हम आशा करते है कि व्यवस्थित व सुनियोजित रूप से इसे सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सकेगा।

■ ***आज के संदर्भ में युवाओं की भूमिका से क्या आप संतुष्ट है?***

युवाओं की भूमिका समय सापेक्ष रहती है उदाहरणार्थ स्वतंत्रता से पूर्व युवाओं के समक्ष देश को स्वतंत्र कराने जैसी चुनौती थी। अतः युवा स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े व संघर्ष का रास्ता अपनाया। इसी प्रकार आज हम विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने की राह पर चल रहे है तो युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। आज युवा विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए अच्छा कर रहे है, किंतु यही हमें अपने देश को समर्थ, सक्षम, शक्तिशाली व विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है तो युवाओं को अपनी भूमिका को और अधिक गंभीरता से लेना होगा।

■ ***अतीत के पृष्ठ पलटकर अपने छात्र जीवन में झांकने पर आज और कल में क्या अंतर पाते है?***

काफी अंतर दिखाई देता है और सबसे बड़ा अंतर सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार से आया है। जब हम छात्र थे, तब अध्ययन व अध्यापन के जो तरीके थे, वह अब भिन्न है। आज ई-लर्निंग का वर्चुअल क्लासेस का जमाना है। ओपन डिस्टेंस लर्निंग का युग चल रहा है, जिससे हम समझ सकते है कि पूरा परिवेश बदल गया है। साथ ही संसाधनों में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यदि हम अपने छात्र जीवन की बात करें तो उस समय ब्लैक बोर्ड के माध्यम से ही टीचिंग होती थी। केवल कक्षा की शिक्षा एकमात्र साधन था। लेकिन अब कई सारे माध्यम देखने को मिलते है। जैसा कि मैंने कहा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हम ई-बुक्स व ई-जर्नल्स भी कम्प्यूटर पर देख सकते है जो कि बहुत बड़ा परिवर्तन है। जो हमें आज और कल में दिखाई देता है। भविष्य में ये और अधिक दृष्टिगोचर होगा। लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि हम जिस मुकाम पर अभी है उसमें सर्वश्रेष्ठ क्या हो सकता है? युवा उसे करने का प्रयास करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करें।

■ ***क्या आज की शिक्षा सही नागरिक बना रही है? और उसमें विश्वविद्यालयों की कितनी भूमिका है?***

ये बहुत महत्वपूर्ण सवाल है, मैं आपको बताता हूं कि हमारे प्राचीन विश्वविद्यालयों की, जिसमें काशी विश्वविद्यालय भी है और मेरा सौभाग्य है कि मैं वहां का कुलपति रहा। विश्वविद्यालय की स्थापना इसलिए की गई थी कि जिम्मेदार और चरित्रवान युवक-युवतियों का निर्माण हो। राष्ट्र निर्माण में उनका योगदान सुनिश्चित किया जा सके। शिक्षा के मंदिरों और विश्वविद्यालयों की ये जिम्मेदारी है कि ये अच्छे नागरिक तैयार करें, किंतु मुझे लगता है कि वर्तमान में शिक्षा के प्रति व्यावसायिक दृष्टिकोण अधिक विकसित हो रहा है। आज आवश्यकता है कि जहां एक ओर हम प्रोफेशनल काम्पीटेंट युवा तैयार करें, वहीं दूसरी ओर उन्हें ऐसा नागरिक भी बनाएं जिसमें राष्ट्र, समाज और पर्यावरण के प्रति सजगता तथा संवेदनशीलता हो और उनमें जिम्मेदारी का अहसास हो। चरित्रवान, राष्ट्र प्रेम और मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत युवाओं का निर्माण करना विश्वविद्यालयों की महती जिम्मेदारी है। विश्वविद्यालयों को और अधिक व्यवस्थित रूप से विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से मानवीय मूल्यों के संपूर्ण विकास के लिए कार्य करना चाहिए।

■ ***युवा उत्सव के माध्यम से आप युवाओं के लिए क्या संदेश देंगे?***

मेरा संदेश यह है कि यह बहुत बड़ा अवसर है जो देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को मिला है। आप सब युवा अपनी अंतर्निहित शक्ति एवं ऊर्जा को पहचानें। अपने कौशल का सही उपयोग कर अपनी ऊर्जा को सकारात्मक गतिविधियों में लगाएं। राष्ट्र को सांस्कृतिक, साहित्यिक व अन्य क्षेत्रों में और अधिक संपन्न व समृद्ध बनाने में अपना योगदान दें। इसी कामना के साथ मैं सभी युवाओं को शुभकामनाएं देता हूं।

इन्दौर की एक झलक

इन्दौर, मध्यप्रदेश का एक प्रमुख शहर है। इसे मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी के नाम से जाना जाता है। इस शहर में दो विश्वविद्यालय सहित राजघराने भी हैं जो इन्दौर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है।

इन्दौर एक औद्योगिक शहर है। यहां लगभग ४ हजार से अधिक छोटे-बड़े उद्योग हैं। इन्दौर की जनसंख्या करीब २६लाख ३५हजार १२७ है।

इन्दौर वैज्ञानिक, तकनीकी अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन्दौर भारत का इकलौता शहर है जहां आई.आई.एम. और आई.आई.टी. जैसे महत्वपूर्ण संस्थान है। इन्दौर में लगभग ६० इंजीनियरिंग कॉलेज सहित कई मेडिकल कॉलेज भी हैं जो यहां की समृद्ध शिक्षा व्यवस्था को भी दर्शाता है।

सोनल चावला

यातायात

इन्दौर शहर भारत के प्रमुख शहरों से हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है। रेल यातायात की दृष्टि से इंदौर मुख्य रेल मार्ग पर स्थित नहीं है लेकिन मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से नजदीक होने के कारण यहां के लोगों को रेल यात्रा में कोई परेशानी नहीं होती है। इन्दौर की बस सेवा यहां की जान है। इन्दौर नगर निगम की नगर बस सेवा और वातानुकूलित आई.बस जो पूरे इन्दौर को जोड़ती है।

प्रमुख ऐतिहासिक, धार्मिक एवं दर्शनीय स्थल

- राजवाड़ा
- कांच मंदिर
- अन्नपूर्णा मंदिर
- गांधी हॉल
- खजराना मंदिर
- देवगुराड़िया
- बिजासन माता मंदिर
- जयरेश्वर महादेव मंदिर

इन्दौर की सरकारी एजेंसियाँ

- इन्दौर जिला प्रशासन
- इन्दौर पुलिस प्रशासन
- नगर पालिका
- इन्दौर विकास प्राधिकरण
- मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

पार्क और मनोरंजन

- अटल बिहारी वाजपेयी रीजनल पार्क
- कमला नेहरू प्राणी संग्रहालय
- मेघदूत गार्डन
- सिटी फॉरेस्ट बिचोली हप्सी

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

इतिहास के झरोखे से

अनुरित पट्वर्धन

विश्वविद्यालय ने पांच दशकों का लंबा सफर तय किया

''धियो यो नः प्रचोदयात्'' के आदर्श वाक्य के साथ स्थापित देवी अहिल्या विश्वविद्यालय आज देश ही नहीं विदेश के अग्रिम विश्वविद्यालयों में शामिल है।

ज्ञान- विज्ञान की विविध शाखाओं सहित उच्च शिक्षा के समग्र क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने प्रगति की है। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने बौद्धिक प्रगति के साथ ही मानवीय मूल्यों के विकास में नित नए आयाम स्थापित किए हैं। हाल ही में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने शिक्षा जगत में स्थापना के पचास वर्ष पूरे किए हैं। १९६४ से अब तक विश्वविद्यालय ने पांच दशकों का लंबा सफर तय किया है। अपनी स्थापना से लेकर आज तक विश्वविद्यालय ने कई पड़ाव एवं कई मंजिलें तय की है। लोकमाता देवी अहिल्या की नगरी इन्दौर में स्थापित यह विश्वविद्यालय आज विशाल क्षेत्र में शिक्षा का प्रकाश फैला रहा है। विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के क्षेत्र में नवीनतम् प्रतिभा का सृजन कर रहा है। विश्वविद्यालय ने वैश्विक पटल पर अपनी अलग पहचान स्थापित की है। भौतिकी, गणित, रसायन विज्ञान, पत्रकारिता और कंप्यूटर पाठ्यक्रम में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय को हाल ही में नैक द्वारा ''ए'' ग्रेड प्रदान की गई है। यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जिसे यह गौरव प्राप्त है। इसकी उपलब्धियों ने हम सबको गौरवान्वित किया है। इन्दौर में उच्च शिक्षा की उज्ज्वल परंपरा रही है। विश्वविद्यालय की स्थापना इन्दौर विश्वविद्यालय अधिनियम १९६० के द्वारा सन् १९६४ में की गई थी। पहले इसका नाम इन्दौर विश्वविद्यालय था। बाद में प्रात:स्मरणीय लोकमाता देवी अहिल्या बाई होलकर के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान के प्रतीक स्वरूप इसका नाम देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इन्दौर किया गया है।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को उद्भव से वर्तमान स्वरूप लेने में पचास वर्ष लगे।

इन्दौर में मध्यभारत क्षेत्र के लिए विश्वविद्यालय की परिकल्पना ने साढ़े चार दशक से अधिक काल तक गर्भस्त रहने का रिकार्ड कायम किया है। बड़ी रोमांचक है इन्दौर में विश्वविद्यालय की यह विकास गाथा इन्दौर में शिक्षा का प्रसार एवं विकास की विस्तृत पृष्ठभूमि रही है। यहां आधुनिक शिक्षा पद्धति की पहली पाठशाला १८४१ में रेसिडेंसी स्कूल की स्थापना के साथ शुरु हुई। इस गौरव गाथा की जीवंत घटक रही है, इन्दौर क्रिश्चियन कॉलेज तथा होलकर कॉलेज जैसी शतायु पार कर चुके शिक्षण संस्थान।

इन्दौर में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हुए विकास की कहानी में एक मई १९६४ का दिन गौरव दिवस के रूप में माना जाना चाहिए। इसी ऐतिहासिक दिवस पर इन्दौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। इसके साथ एक सच यह भी है कि सेंट्रल इण्डिया के सबसे बड़े शैक्षणिक शहर इन्दौर को

विश्वविद्याल पाने का गौरव वर्षों पहले मिल जाना था।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय को मुख्य रूप से तीन परिसर में स्थापित किया गया है। विश्वविद्यालय का प्रशासनिक केन्द्र नालंदा परिसर कहलाता है जो कि आर.एन.टी. मार्ग पर स्थित है। विश्वविद्यालय का मुख्य शिक्षा केन्द्र तक्षशिला परिसर खंडवा रोड़ पर स्थित है जो कि ५१० एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है।

तक्षशिला परिसर के अंतर्गत विश्वविद्यालय के २८ शिक्षण संस्थान है।

विश्वविद्यालय के अवंतिका परिसर में मुख्य रूप से विश्वविद्यालय का प्रौद्योगिकी संस्थान स्थित है जो इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी के नाम से जाना जाता है। यह परिसर १५४ एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों में एक हजार से ज्यादा छात्र-छात्राएं स्नातक एवं स्नातकोत्तर अवधि के विद्यार्थी हैं वहीं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से संबद्ध ३०० से ज्यादा कॉलेजों में ३ लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के पास स्वयं का एफ.एम. रेडियो स्टेशन है जिसका नाम ज्ञानवाणी है। ज्ञानवाणी की स्थापना जून २००६ में लोगों को शिक्षित करने हेतु की गई थी जिसका संचालन विश्वविद्यालय के विभाग एजुकेशनल मल्टी मीडिया रिसर्च सेंटर से किया जाता है। २०१४ में विश्वविद्यालय को नैक द्वारा ''ए'' ग्रेड प्रदान किया गया है और अब विश्वविद्यालय भारत के मॉडल विश्वविद्यालयों की दौड़ में अग्रिम पंक्ति में है।

दो ज्योतिर्लिंग के बीच इंदौर

ओंकारेश्वर

देश के बारह ज्योतिर्लिंग में से एक है ममलेश्वर, जो ओंकारेश्वर में स्थित है। ओंकारेश्वर इंदौर शहर से ७७ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह तीर्थ नर्मदा नदी के किनारे स्थित है। यहां देश ही नहीं, विदेशों से भी पर्यटक ओंकारेश्वर दर्शन के लिए आते हैं। कहते हैं जो मनुष्य इस तीर्थ में पहुंचकर अन्नदान, तप, पूजा आदि करता है, मरणोपरांत उसे भगवान शिव के लोक में स्थान प्राप्त होता है।

कहा जाता है कि पूर्वकाल में यहां एक ही शिवलिंग था, जो बाद में दो हिस्सों में विभक्त हो गया। एक हिस्सा ओंकार के नाम से और दूसरा परमेश्वर या अमलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। आज यह शिवलिंग प्रदेश ही नहीं, बल्कि भारत सहित विदेशों तक प्रसिद्ध है।

ओंकारेश्वर में मुख्य रूप से कार्तिक उत्सव, महाशिवरात्रि और नर्मदा जयंती मनाई जाती है।

महादेव की नगरी उज्जैन

हिन्दुओं का पवित्र शहर उज्जैन, इंदौर से ५५ किलोमीटर दूर बसा है। यहां हर नुक्कड़ पर एक मंदिर देखा जा सकता है। विश्व के बारह ज्योतिर्लिंग में से एक उज्जैन में 'महाकाल' के नाम से स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग को उज्जैन शहर की शान भी कहा जाता है। यहां आपको भस्म आरती देखने को मिलती है। उज्जैन क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। यहां के कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में मंगलनाथ, गोपाल मंदिर, हरसिद्धि मंदिर, चिंतामणि गणेश मंदिर और जयसिंह पुरा मंदिर शामिल है।

महेश्वर भी आकर्षण का केंद्र

विरासत में समृद्ध आकर्षण के स्थानों में महेश्वर एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। चाहे वे किले हो, घाट हो, महल हो, मंदिर हो या अन्य आकर्षण केंद्र, पर्यटक भारी संख्या में महेश्वर रुक कर आनंद लेते हैं। महेश्वर की उच्च श्रेणी की अनोखी वास्तुकला से अक्सर पर्यटक आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

महेश्वर में भगवान शिव के कई मंदिर है और इस स्थान का नाम का शाब्दिक अर्थ भी 'भगवान महेश्वर का घर' है। महेश भगवान का एक नाम है। इस शहर में निःसंदेह ही सभी पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाए जाते है। यहां मनाए जाने वाले कुछ उत्सवों में महामृत्युंजय रथ यात्रा, भगवान गणेश और नवरात्र त्योहार प्रमुख है। महेश्वर में छुट्टियां बिताने का सर्वश्रेष्ठ समय सर्दियों का है। यहां आप अपने परिवार के लिए प्रसिद्ध साड़ी खरीद सकते है।

मालवा का कश्मीर : माण्डू

ऐतिहासिक नगरी माना जाने वाला मांडू इस समय पर्यटन के मानचित्र पर एक आकर्षक स्थान रखता है।

माण्डू मालवा के समृद्ध इतिहास का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह इंदौर से ९० कि.मी की दूरी पर विंध्या पर्वतमाला में स्थित है। माण्डू को रचने बसाने का प्रथम श्रेय परमार राजाओं को है। माण्डू अपनी भौगोलिक विशेषता के कारण उनकी राज्य की राजधानी बनी। बाद में दिल्ली के सुल्तान ने इस शहर पर विजय पाई और नाम दिया शादियाबाद, इस शब्द का तात्पर्य है ''आनंद नगरी''। यहां की हरी भरी वादियाँ, ये सब मिलकर माण्डू को मालवा का स्वर्ग बनाते हैं। जहाज महल, हिंडोला महल, जामा मस्जिद, मालिक मुगीस मस्जिद, रूपमती महल माण्डू के मुख्य दर्शनीय स्थल हैं। जहाज महल, माण्डू का एक खुबसुरत, ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह महल दो झीलों कापूर तालाब और मुंज तालाब के बीच बना हुआ है जो जहाज के जैसा दिखता है। यह महल फोटो खींचने के शौकीन पर्यटकों को अवसर प्रदान करता है। हिंडोला महल, माण्डू की शाही इमारतों में से एक है। यह भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण चिन्ह है और इसकी वास्तुकला भी काफी विख्यात है इस आदिवासी बहुल धार जिले में आने वाला मांडू सभी के लिए प्रिय है।

देवियों का वास देवास -देवास,इन्दौर से मात्र ३५ किमी दूर बसा हुआ एक ऐसा जिला जहां बैंक नोट प्रेस चमड़ा उद्योग के साथ-साथ मां चामुण्डा का विशाल मंदिर है जो कि देवास टेकरी के नाम से पूरे मध्य भारत में प्रसिद्ध है। यह शहर अपने सोयाबीन उद्योग के कारण देश की सोया राजधानी के रूप में भी प्रसिद्ध है। देवास के इतिहास में मराठा साम्राज्य का वर्चस्व रहा है जिस कारण आज भी यहां हिन्दी के साथ मराठी भाषा भी बोली जाती है। देवास शहर का नाम देवी बैरवी के नाम पर रखा गया है। यहां के लोगों की मान्यता है कि इस शहर में देवियों का वास है। देवास कई छोटे-बड़े उद्योगों का गढ़ है जिसमें चमड़ा उद्योग सबसे प्रमुख है,जो कि राष्ट्रीय ही नहीं अंतर राष्ट्रीय स्तर की प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। सरकारी संस्थानों की बात करें तो शहर में भारतीय रिजर्व बैंक की बैंक नोट प्रेस भी मौजूद है। देवास प्रदेश को धार्मिक स्थलों के साथ-साथ अब औद्योगिक नगरी के रूप में भी उभर रहा है।

विभूति, परविंदर, आशीष, धीरज, योगेश की विशेष रिपोर्ट

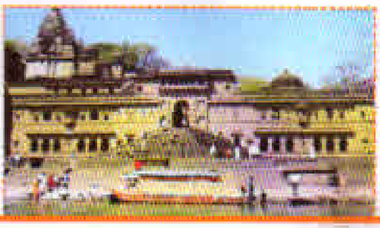

लज्जतों का शहर इंदौर

मालवा की एक प्रसिद्ध कहावत है। इसके अनुसार मालवा में आपको कहीं भी खान-पान में कोई कमी नहीं होगी। जिस प्रकार भारत में अतिथि देवो भव का संस्कार है, उसी प्रकार इंदौर में जब कोई अतिथि आता है तो हम उसे मालवा के व्यंजनों का आनंद जैसे मुंबई पहुंचते ही बड़ा पाव और दिल्ली में जाकर छोले भटूरे, इंदौर आए तो भिया पोहा-जलेबी नहीं खाया तो क्या खाया। मध्यप्रदेश की व्यावसायिक राजधानी और लज्जतों के शहर इंदौर की लोकप्रियता देश में ही नहीं, विदेश में भी है। इंदौरियों के दिन की शुरुआत जहां छप्पन की कट चाय, पोहा-जलेबी, कचोरी से होती है। वहीं दाल-बाफले, लड्डू दिन को पूरा करते हैं। शाम को इंदौरियों का जमावड़ा छप्पन पर देखने को मिलता है, वहीं सराफा की जायकेदार चाट रातों को और खुशनुमा बनाती है।

खाने के प्रमुख स्थान- सराफा बाजार दिन में इंदौर की अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है और रात में यही बाजार तरह-तरह के व्यंजनों के जायको से महक उठता है। यहां के स्वादिष्ट व्यंजनों में विजय चाट हाउस के खोपरा पेटीस, जोशीजी के दही बड़े, गरमा-गरम मालपुए, गुलाब जामुन पेश है। यहां हर मौसम की कचौरियां जैसे बटले की कचोरी, दाल की कचोरी, आलू-प्याज की कचोरी, ठंड में गराडू और भुट्टे का कीस उपलब्ध है।

छप्पन इंदौर की पहचान है। यहां आप स्थानीय जायको का लुफ्त उठा सकते हैं। हॉट-डॉग, नमकीन, शिकंजी, चाट आदि सभी यहां की शान है। छप्पन इंदौर के युवाओं की पसंदीदा जगहों में से एक है, इसी वजह से यहां सुबह से लेकर रात तक चहल-पहल बनी रहती है। इंदौर के खान-पान की बात हो और आनंद बाजार का जिक्र ना हो ऐसा कैसे हो सकता है। यह हिस्सा अपने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है। यहां आपको शाकाहारी, मांसाहारी, मिठाई आदि सभी चीजे उपलब्ध है।

पूरे देश में इंदौर अपने नमकीन के लिए प्रसिद्ध है। दिल्ली का नेता हो या मुंबई का उद्योगपति सभी इंदौर के नमकीन के जायके को पसंद करते है। यहां के सेव, मिक्चर, इत्यादि देशभर में भेजे जाते है। गुजरात में भेजे जाने वाले नमकीन खास वहां के लोगों के हिसाब से कम मिर्च वाले बनाए जाते है।

यहां के लोग नमकीन के जायके का मजा भोजन के बाद स्वाद बदलने के लिए लेते है पर कई लोग नमकीन को मुख्य भोजन में भी शामिल करते है। शहर में बढ़ रहे नमकीन के लघु उद्योगों के विकास के लिए केंद्र सरकार ने नमकीन क्लस्टर की स्थापना की है। इसके लिए एमपीएकेवीएन की मदद से जमीन भी उपलब्ध करा दी गई है। इसकी वजह से जल्द ही इंदौर के नमकीन विश्वभर में निर्यात के लिए तैयार किए जाने लगेंगे। इंदौर के लोग नमकीन के साथ-साथ तरह-तरह की मिठाइयों को भी पसंद करते है। इसलिए यहां के लोग यहां के पानी की तरह ही मीठे है। यहां देश की हर प्रसिद्ध मिठाई उपलब्ध है, जैसे बंगाली मिठाई, महाराष्ट्र का श्रीखंड तथा गुजरात की प्रसिद्ध मिठाइयां। स्थानीय लोकप्रिय मिठाइयों में जलेबी, इमरती, मालपुए, रबड़ी इत्यादि प्रसिद्ध है। यहां की मिठाइयों को खासतौर पर उनके स्वाद व गुणवत्ता के लिए पहचाना जाता है। गत एक दशक में ड्रायफ्रूट आधारित मिठाइयों ने भी काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है। इंदौर में आपको हर प्रांत, पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण के सभी प्रकार के व्यंजनों या खान-पान का संयुक्त जायका मिलेगा। आप इंदौर आए है तो यहां की मिठाई, नमकीन और कचोरी का स्वाद जरूर लीजिएगा।

विभूति वांगे और आशीष एलेक्स

सत्कार को तैयार

राष्ट्रीय युवा महोत्सव प्रवाह २०१५ के लिए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय पूरी तरह से तैयार है। मध्यप्रदेश के किसी भी विश्वविद्यालय में पहली बार होने जा रहे इस आयोजन के लिए विश्वविद्यालय ने अपनी तैयारी पूरी कर ली है। १२ फरवरी से १६ फरवरी तक आयोजित इस राष्ट्रीय-युवा महोत्सव में देश भर के करीब ३० विश्वविद्यालयों के करीब १००० विद्यार्थी भाग लेंगे। देश भर के कई क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए विश्वविद्यालय ने १५ समितियों का गठन किया है। देश भर से आए प्रतिभागियों के लिए ४ बॉयज हॉस्टल एवं चार गर्ल्स हॉस्टल में ठहरने की व्यवस्था की है। युवा उत्सव की विभिन्न प्रतियोगिताएं विश्वविद्यालय ऑडिटोरियम एवं ऑडिटोरियम के बाहर बने मुक्ताकाश मंच पर होंगी। प्रतिभागियों एवं मेहमानों का सत्कार मालवी व्यंजन से किया जाएगा जिसके लिए

विश्वविद्यालय स्थित इंडियन कॉफी हाउस ने विशेष तैयारी की है। युवा महोत्सव के शानदार आगाज के लिए पूरे तक्षशिला परिसर को एक अलग अंदाज में सजाया है। प्रवाह २०१५ को लेकर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी खासे उत्साहित है, और लगभग २०० वालंटियर की टीम प्रतिभागियों के सत्कार को तैयार है। विश्वविद्यालय प्रबंधन के अनुसार विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव प्रवाह २०१५ की मेजबानी के लिए पूरी तरह से तैयार है।

सूरज, धीरज एवं योगेश

We Speaks....

हमारी यूनिवर्सिटी में पहली बार आयोजित हो रहे राष्ट्रीय युवा महोत्सव को लेकर मैं बहुत उत्साहित हूं। पूरे देश से विद्यार्थी इसमें भाग लेंगे, सच में बहुत मजा आने वाला है।

विकास कुमार,
अर्थशास्त्र अध्ययनशाला

डी. ए. वी. वी. में होने वाले राष्ट्रीय युवा महोत्सव में हमें लघु भारत देखने को मिलेगा। देश भर से आए विद्यार्थी अपनी-अपनी संस्कृति का परिचय देंगे।

गौरव धर दुबे,
वाणिज्य अध्ययनशाला

राष्ट्रीय युवा महोत्सव का डी. ए. वी. वी. में आयोजन हमारे लिए गर्व की बात है। मैं इस युवा उत्सव में वालिंटियर हूं। इस अनुभव का भविष्य में बहुत लाभ होगा।

- रजत चौधरी,
आई.आई.पी.एस

PRAVAH REFLECTION OF INDIAN DIVERSITY

Cultural differences should not separate us from each other, but rather cultural diversity brings a collective strength that can benefit all of humanity. 'Unity in diversity'- These are not just words but something that country will experience in the 30th National Youth Festival-PRAVAH hosted by Devi Ahilya Vishwavidhyalaya, INDORE.

Youth festival is a 30 year old tradition that celebrates and commemorates the birth anniversary of youth icon Swami Vivekananda. It brings together the spirit of Indian culture which is showcased by the youth in this festival. Music, dance, literary, theatre and fine arts are part of our Indian society and these are the categories which are the part of our National Youth Festival. The participation of the students from the different corners of country itself discerns the importance of the event.

May it be down from the south, up from the north, right from the east, and left from the west. The students of all the region will portrait the vivid culture of India. This youth festival is aimed at honing skills among the young students, and infuses them with dynamism and self confidence. This is also to set them free from the stress of academic life. Approximately 970 participants in this glittering festival across 67 universities from 5 zones will render the cultural diversity of geographical feature of India. Among them to be named few are Banaras Hindu University, Vellore Institute of Technology, Mumbai University, Punjab University and various others. This youth festival gives a platform for variety of activities which not only reflects the spirit of friendship but also zeal amongs the students.

Srishti Jadhav &
Parvinder Arora

प्रधान संपादक - प्रो. (डॉ.) मानसिंह परमार, **संपादक** - साकेत रमण, **संपादन सहयोग** - सुश्री अमिता, डॉ.अंशु भाटी, डॉ. मनीषा शर्मा, डॉ. राजू सी.जॉन, डॉ.ललिता शर्मा, **सहायक संपादक**- निरंजन कुमार, जितेन्द्र जाखेटिया, **उपसंपादक**- राजेन्द्र शुक्ला, सुधीश परदेशी, अमृता परमार, **प्रकाशक** : कुलसचिव देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर **मुद्रण** : श्री सर्वोत्तम इंदौर

Enhancing Creativity among Students

The university conducts several workshops, training programs and competitions based on art and craft for students. An exhibition "Nav Srujan" is conducted every year to showcase the creativity of students

देवी अहिल्या जन व्याख्यानमाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

आमंत्रण

मान्यवर,

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने प्रतिमाह एक जनलोकप्रिय विषय पर व्याख्यान आयोजित करने का संकल्प लिया है, इसी के तहत तीसरा व्याख्यान आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम

विषय : 'मानव जाति का भविष्य उज्जवल है'
The future of mankind is bright

अध्यक्ष : प्रोफेसर पी.के. चांदे
पूर्व निदेशक, जी.एस.आई.टी.एस., इन्दौर

मुख्य अतिथि : डॉ. नरेन्द्र धाकड़
कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

मुख्य वक्ता : डॉ. अपूर्व पौराणिक
वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट,
महात्मा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय एवं
महाराजा यशवंत राव चिकित्सालय, इन्दौर

दिनांक : 15 अक्टूबर 2016, शनिवार

समय : सायं 4.00 बजे

स्थान : देवी अहिल्या विश्वविद्यालय सभागृह
तक्षशिला परिसर, खण्डवा रोड, इन्दौर

कृपया अवश्य पधारें।

सम्पर्क सूत्र
डॉ. सोनाली
मोबाईल : 94253 17435

भवदीय
कुल सचिव एवं
व्याख्यानमाला समिति

देवी अहिल्या जन व्याख्यानमाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
PYRAMID MEDITATION
AND MUSIC
डॉ. नरेन्द्र कुमार धाकड़
Brahmarshi Patriji

देवी अहिल्या जन
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,

सिटी एंकर वरिष्ठ पत्रकार-लेखक डॉ वेदप्रताप वेदिक ने शुक्रवार को एक कायक्रम म कहा-

गणतंत्र के मालिक की तरह व्यवहार करें आम लोग

सिटी रिपोर्टर • वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार डॉ. वेदप्रताप वेदिक का कहना है कि सबसे पहले देश के आम आदमी को अपने आप को पहचानना होगा। उसे यह महसूस करना होगा कि वह इस गणतंत्र का मालिक है। किसी भी जनप्रतिनिधि से उसका व्यवहार गणतंत्र के मालिक की तरह होना चाहिए। जिस दिन आमलोगों में यह जिम्मेदारी के साथ यह मालिक-भाव आएगा, उसी दिन भ्रष्ट नौकरशाह और नेता आ आपके सामने टिक नहीं पाएंगे।

इसलिए लोकतंत्र को मजबूत करना है तो आमलोगों को नेताओं के मुकाबले अपनी जिम्मेदारी ज्यादा समझना चाहिए। यह बात उन्होंने स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की जनव्याख्यानमाला के तहत शुक्रवार को कही। वे लोकतंत्र को मजबूत करने में आम लोगों की भूमिका पर बोल रहे थे।

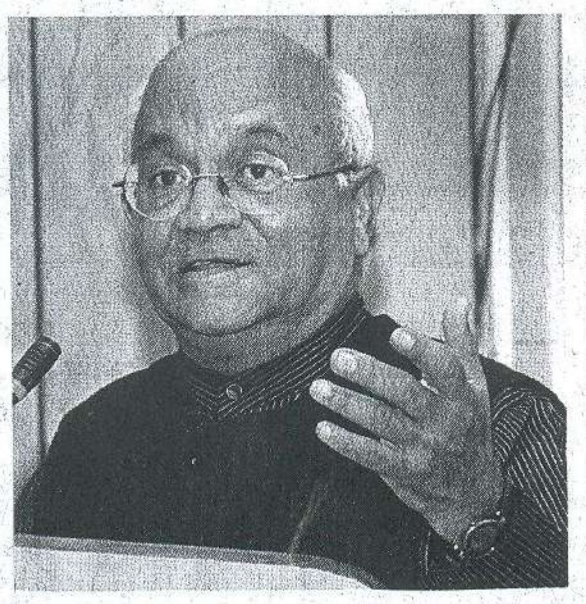

जहां राजनीतिक चेतना है, वहां लोकतंत्र है

उन्होंने कहा कि दुनिया में वहीं लोकतंत्र हैं जहां ज्ञान है, राजनीतिक चेतना है। जहां समाज में शांति और सदभावना है। हमें संविधान ने समान अधिकार दिया है, यहीं से लोकतंत्र की शुरुआत हुई। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज हमारे राजनीतिक दल प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियां बन गए हैं। लोकतंत्र को सशक्त बनाने के आम आदमी को 90% मतदान करना चाहिए।

अनिवार्य किया जाना चाहिए मतदान

हमारे देश में मतदान अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। मतदान ना करने पर जुर्माना लगाना चाहिए। हम पैसा, धर्म, नशा से ऊपर उठकर ही मतदान कर देश में परिवर्तन ला सकते हैं। आखिरी बात यह कि शाकाहार मनुष्य का आहार है, मांसाहार नहीं। मांसाहार को रोककर ही पशुओं की रक्षा करनी होगी। पूर्व न्यायाधीश एवं हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल वी.एस. कोकजे ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत करना जनता जनता कि जिम्मेदारी है। इसलिए लोगो का जागरुक होना जरूरी है। यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. नरेन्द्र धाकड़ ने भी संबोधित किया।

विश्वविद्यालय में जन व्याख्यानमाला...

बड़ी समस्या का समाधान है स्टार्टअप

आईआईएम इंदौर के निदेशक ने दिया उद्बोधन

इंदौर @ पत्रिका. 'आज शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट दोनों की आवश्यकता है। पहले जहां नौकरी नहीं करने वाले अपना बिजनेस शुरू करते थे, वहीं आज बिजनेस एक इनोवेशन है। इनोवेशन समस्या समाधान के साथ नया विचार है, जिसे नए रूप से लागू कर लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है।'

यह बात देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की जन व्याख्यानमाला में भारतीय प्रबंध संस्थान, इंदौर के निदेशक प्रो. ऋषिकेश टी. कृष्णन ने 'स्टार्टअप : शुरुआत, अवसर एवं चुनौतियां' विषय पर कही। कार्यक्रम की दूसरी कड़ी में प्रो. उपेन्द्र धर ने बताया, 'स्टार्टअप आज के समय में बहुत ही प्रासंगिक विषय है। देश को रोजगार की जितनी आवश्यकता नहीं है, उससे अधिक रोजगार के अवसर देने वालों की आवश्यकता है। यह सभी एक प्रकार से चुनौती भरा है। टेक्नोलॉजी के बिना किसी विकास नहीं किया जा सकता। यह कार्यक्षमता को बढ़ाता है। निवेश के सही तरीके से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।'

एक छात्र ने सवाल किया कि अमूमन हर बड़ा स्टॉर्टअप ड्रॉप आउट यानी बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले ही करते हैं। इस पर प्रो. कृष्णन से जवाब देते हुए कहा, 'जरूरी नहीं है कि ड्रॉप आउट अच्छे स्टार्ट अप करते है, बल्कि उनके पीछे काम करने वाले लोग काफी उच्च शिक्षित होते हैं। यदि अच्छे लक्ष्य को हासिल करना है तो उसके लिए पढ़ाई पूरी करना बेहद जरूरी है। कोई भी स्टार्टअप बगैर संघर्ष के कामयाब नहीं हो सकता।'

प्रो. कृष्णन के टिप्स

- स्टार्टअप शुरू करने से पूर्व एक चैलेंज बुक बनाएं।
- देखें, लोगों को किस चीज में समस्या है। घाटे की पहचान करें।
- लोगों दिनचर्या में चीजों की हानि से स्टार्टअप के लिए आइडिया लें।
- प्रयोग कम लागत के साथ करें।
- फेल हो तो कारण को जानें और फेरबदल कर फिर प्रयोग करें।
- स्टार्टअप में नवीनता और रचनात्मकता बने रहना जरूरी है।
- शुरुआत से ही फोकस और सहयोगी फाउंडर्स की पहचान भी जरूरी है।

सिखाया सबक

PATRIKA.COM/ENTERTAINMENT

PROGRAMME...

बढ़ रहा वसुधैव कुटुंबकम की धारणा पर भरोसा

न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पुराणिक का 'द फ्यूचर ऑफ मैनकाइंड इज ब्राइट' पर व्याख्यान

डॉ. पुराणिक

इंदौर • ह्यूमन ब्रेन के हर हिस्सा अलग तरह का काम करता है। कुछ हिस्से हिंसा की ओर तो कुछ संवेदना की ओर प्रेरित करते है। ऑक्सीटोक्सीन हार्मोन और मिरर न्यूरॉन के कारण एक-दूसरे पर भरोसा बढ़ रहा है। कुछ स्टडीज के नतीजे बताते हैं कि संवेदना वाले हिस्से का विकास ज्यादा हुआ है। इंसान में संवेदनशीलता बढ़ने से ही दुनिया का भरोसा वसुधैव कुटुंबकम की धारणा पर बढ़ रहा है।

द फ्यूचर ऑफ मैनकाइंड इन ब्राइड (मानव जाति का भविष्य उज्जवल है) विषय पर हुए व्याख्यान में न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पुराणिक ने कई उदाहरणों और रिसर्च के आधार पर आने वाले समय को बेहतर बताया। वे शनिवार को डीएवीवी की जनव्याख्यानमाला में संबोधित कर रहे थे। डॉ. पुराणिक ने बताया, 'विकासशील देशों में तेजी से प्रदूषण बढ़ रहा है, लेकिन विकसित देशों में पर्यावरण सुधर है। हिंसा के आंकड़े भी घटते जा रहे है।'

डॉ. पुराणिक ने कहा, 'अब अमीर होना खुश होने की गारंटी नहीं है। इसलिए अब हैप्पीनेस की बात की जाने लगी है। सुविधाएं हमारे जीवन को बहुत आसान बनाती जा रही है, लेकिन हैप्पीनेस के लिए अब बैक टू नैचर जैसी बातें हो रही है। उन्होंने कहा, 'टेक्नोलॉजी का फायदा शुरुआत में समझ नहीं आता। इसलिए इसका विरोध शुरू हो जाता है।' कुलपति प्रो. नरेंद्र धाकड़ ने भी टेक्नोलॉजी के कारण कई काम आसान होने व भविष्य में और सुविधाएं बढ़ने की बात कही। संचालन प्रो. यामिनी करमरकर ने किया।

... 16 से 20 अगस्त तक विलंब शुल्क 100 रुपए देना होगा।

देअविवि में जन व्याख्यानमाला प्रारंभ- बोले डॉ. वैदिक

भ्रष्टाचार से निपटने में न रिश्वत देनी चाहिए और न लेनी चाहिए

(नगर प्रतिनिधि)

इंदौर। भ्रष्टाचार से निपटने में न रिश्वत देनी चाहिए और न लेनी चाहिए। पूर्णतः नशाबंदी में आम आदमी की गहरी भूमिका है। हर व्यक्ति को कम से कम अपने हस्ताक्षर तो हिंदी में ही करने चाहिए और इसको एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए। शाकाहार अपनाकर जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है, इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

देवी अहिल्या जन व्याख्यानमाला श्रृंखला का शुभारंभ करते हुए यह बात वरिष्ठ पत्रकार एवं चिंतक डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कही। देअविवि के तक्षशिला परिसर स्थित स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस एंड आईटी के सभागृह में शुक्रवार की शाम को 'लोकतंत्र के सशक्तिकरण में आम नागरिक की सहभागिता' विषय पर चिंतक डॉ. वैदिक प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित हुए। आपने यह भी कहा कि आम आदमी की भूमिका कर्त्तव्यों के साथ समझनी होगी। आपने वोट का सही इस्तेमाल करने के दायित्व के प्रति भी चेताया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्व न्यायधीश एवं राज्यपाल (हिमाचल प्रदेश) वी.एस. कोकजे थे। श्री कोकजे ने कहा कि आम आदमी को जनप्रतिनिधियों से अपनी अपेक्षाएं उचित एवं सीमित रखनी चाहिए। लोकतंत्र में जन प्रतिनिधि की बड़ी जिम्मेदारी होती है। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नरेंद्र कुमार धाकड़ ने विश्वविद्यालय की ओर से इस श्रृंखला को प्रारम्भ करने की आवश्यकता की जानकारी दी। डॉ. वैदिक द्वारा प्रबुद्धजनों प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। कार्यक्रम में कार्यपरिषद् की सदस्य श्रीमती जमीला जालीवाला भी मंच पर उपस्थित थीं। आभार प्रदर्शन स्कूल ऑफ जर्नलिज्म की विभागाध्यक्ष डॉ. सोनाली नरगुंदे ने किया।

यूनिवर्सिटी ऑडिटोरियम में न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पौराणिक ने कहा

दुनिया हमेशा अच्छे और बेहतरी के लिए बदलती रहती है

• डॉ. अपूर्व पौराणिक

CTURE

ी रिपोर्टर • निराशा कुछ जीवियों का स्थायी भाव है। ावादियों का यही सोच है कि यकाल, भूतकाल का ही वृहत प है। उसी की निरंतरता है न ऐसा नहीं होता। दुनिया हमेशा और बेहतरी के लिए बदलती ी मानव जाति एक सामूहिक है, जो लगातार, हर युग में ाओं को हल करती जाती है। लेकिन और नई समस्याएं आती है और फिर हल कर ली जाती हैं। यह चक्र चलता रहता है। प्रत्येक वृत्त, उसी बिंदु पर नहीं लौटता, एक पायदान ऊपर लौटता है। यही उम्मीद है और इसी उम्मीद में मानवजाति का भविष्य उज्जवल है। यह बात वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पौराणिक ने कही। वे डीएवीवी की जनव्याख्यानमाला के तहत 'मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल है' विषय पर बोल रहे थे।

शहरों में उम्मीदें हैं, भविष्य है

उन्होंने कहा कि हर पीढ़ी के बुद्धिजीवी भूल जाते हैं कि पुरानी पीढ़ी जिन चिंताओं से दुबली हुई जा रही थी वे समस्याएं हल की जा चुकी हैं। ऐसे में मनव की मेधा, जिजीविषा, उद्यमशीलता, क्रांतिकारी अवधारणाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इतिहास साक्षी है, मोहनजो दारो से मेनहट्टन तक उन्नत व सफल सभ्यताएं शहरों में ही पनपी हैं। शहरों में उम्मीदें हैं, भविष्य है, किस्मत है, स्वतंत्रता है, विविधता और गतिमानता है।

अध्यक्षता प्रो. पी.के चांदे ने की। कुलपति डॉ नरेंद्र धाकड़ मुख्य अतिथि थे। आभार सोनाली नरगुंदे ने माना।

जन-व्याख्यानमाला

गूगल ने किया जागृत

यंग रिपोर्टर • इंदौर
editor@peoplessamachar.co.in

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित जन-व्याख्यानमाला की तीसरी कड़ी के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व पौराणिक रहे। उन्होंने 'मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल है' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा- वातावरण की समस्या विकराल समस्या है। विकासशील देशों में प्रदूषण बढ़ रहा है, लेकिन विकसित देशों में वातावरण शुद्ध है। मनुष्य की औसत आयु भी बढ़ रही है। एचआईवी एड्स से होने वाली मौतों की संख्या भी कम होने लगी है। हिंसा में भी कमी हुई है, लेकिन हमारी सहनशीलता में कमी आई है। शांतिकरण की प्रक्रिया आज से पांच हजार वर्ष पूर्व शुरू हुई थी। सभ्यताकरण का दौर दो हजार वर्ष का है। इसके बाद पुनर्जागरण का युग शुरू हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अधिकारों की बात की जाने लगी। मृत्युदंड की दर भी कम हुई है। प्रजातांत्रिक देशों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। गुगल ने लोगों को जागृत करने के लिए कई किताबों को ऑन लाइन किया।

डॉ. पौराणिक ने कहा- स्त्रियों को मारना 1950 तक एक सामान्य बात थी, लेकिन अब महिलाओं के खिलाफ अत्याचार करना कानूनन अपराध है। आज हम स्त्री अधिकारों को लेकर सजग हैं। बच्चों को लेकर भी हम अधिक संवेदनशील हुए हैं।

संवेदना का हुआ विकास

डॉ. पौराणिक ने न्यूरोलॉजी के संदर्भ में बताते हुए समझाया कि मनुष्य के मस्तिष्क के कई भाग होते हैं, जिसमें कुछ हिंसा और कुछ संवेदना के लिए प्रेरित करते हैं। पिछले कुछ सालों में न्यूरोलॉजी की स्टडी के दौरान यह पाया गया कि मनुष्य के मस्तिष्क के उस हिस्से में विकास हुआ है, जिसमें हमें संवेदना के लिए प्रेरित किया जाता है, इसीलिए विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा पर विश्वास बढ़ा है। प्राकृतिक आपदाओं पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली मृत्यु में भी कमी आई है।

उन्होंने बताया- अब अमीर होना खुश होने की गारंटी नहीं है, इसीलिए हैप्पीनेस की बात की जाने लगी है। बैक टू नेचर कहना आसान है, लेकिन सुविधाएं हमारे जीवन को आसान बना रही हैं। पहले जहां हमारी औसत आयु कम थी, वहीं अब बढ़ गई है। मानव जाति में कई बड़े विनाश हुए हैं। कैंसर, नाभकीय युद्ध, रेडियोधर्मिता, अकाल और जनसंख्या, संसाधनों की कमी, शुद्ध वायु आदि प्रमुख हैं, लेकिन फिर भी जीवन बेहतर हुआ है। कई घोषणाएं विफल हुई हैं। 1970 के दशक में अमेरिकी पत्रिका 'लाइफ' ने लिखा था कि लोगों को मॉस्क पहनकर निकलना पड़ेगा। कुछ पत्रिकाओं ने घोषणा की थी कि रेडिएशन से लोगों की मृत्यु हो जाएगी। अनेक जन्मजात विकृतियां बढ़ जाएंगी, लेकिन स्थितियां सामान्य हैं। एक समय में दुनिया की जनसंख्या स्थिर हो जाएगी और खाद्यान्नों का उत्पादन भी बढ़ रहा है। तकनीकों के कारण पृथ्वी का जीवन भी बढ़ रहा है। ऊर्जा की निपुणता भी बढ़ती जा रही है। ईंधन भी बढ़ रहा है। ऊर्जा का हम अधिक बेहतर तरीके से उपयोग कर रहे हैं। जेनेटिक इंजीनियरिंग ने जीवन को और भी आसान बनाया है। अच्छे नियम, प्रजातंत्र, अधिकार, प्रॉपर्टी आदि हमारे जीवन को और भी बेहतर बना सकते हैं। हमें मनुष्य की सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रगति के विषय में विचार करना चाहिए। जिन राष्ट्रों ने संरक्षणवाद को बढ़ावा दिया है, उनका विकास रूक-सा गया है। जितने भी समाज विकसित हुए हैं, उनमें पहले आर्थिक समृद्धि हुई है, फिर बौद्धिक समृद्धि आई है। 21वीं शताब्दी और भी प्रजातांत्रिक होगी।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में प्रोफेसर पीके चांदे व कुलपति डॉ. नरेंद्र धाकड़ ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

छात्र विनर

मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल है

इन्दौर।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित जनव्याख्यानमाला की तीसरी कड़ी के मुख्य वक्ता थे प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ अपूर्व पौराणिक । उन्होंने ''मानव जाति का भविष्य उज्जवल है'' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा वातावरण की समस्या विकराल समस्या है। विकासशील देशों में प्रदूषण बढ़ रहा है लेकिन विकसित देशों में वातावरण शुद्ध है। मनुष्य की औसत आयु भी बढ़ रही है। एचआइवी एड्स से होने वाली मौतों की संख्या भी कम होने लगी है। हिंसा में भी कमी हुई है। लेकिन हमारी सहनशीलता में कमी आई है। शांतिकरण की प्रकिया आज से पांच हजार वर्ष पूर्व शुरू हुई थी। सभ्यताकरण का दौर दो हजार वर्ष का है। इसके बाद मुर्नजागरण का युग शुरू हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अधिकारों की बात की जाने लगी। मृत्युदंड की दर भी कम हुई है। प्रजातांत्रिक देशों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। गुगलने लोगों को जागृत करने के लिए कई किताबों को ऑनलाइन किया। स्त्रियों को मारना 1950 तक एक सामान्य बात थी लेकिन अब महिलाओं के खिलाफ अत्याचार करना कानूनन अपराध है। आज हम स्त्री अधिकारों को लेकर सजग है। बच्चों को लेकर भी हम अधिक संवेदनशील हुए हैं। डॉ. पौराणिक ने न्यूरोलॉजी के संदर्भ में बताते हुए समझाया कि मनुष्य के मस्तिष्क के कई भाग होते हैं। जिसमें कुछ हिंसा और कुछ संवेदना के लिए प्रेरित करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में न्यूरोलॉजी की स्टडी के दौरान यह पाया गया कि मनुष्य के मस्तिष्क के उस हिस्सें में विकास हुआ है जिसमें हमें संवेदना के लिए प्रेरित किया जाता है। इसीलिए विश्व में वसुधैव कटुम्बकम की धारणा पर विश्वास बढ़ा है। प्राकृतिक आपदाओं पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली मृत्यु में भी कमी आई है। उन्होंने बताया अब अमीर होना खुश होने की गारंटी नहीं है। इसीलिए हैप्पीनेस की बात की जाने लगी है। बैक टू नेचर कहना आसान है लेकिन सुविधाएं हमारे जीवन को आसान बना रही है। पहले जहां हमारी औसत आयु कम थी वही अब बढ़ गई है। मानव जाति में कई बड़े विनाश हुए हैं। कैंसर, नाभकीय युद्ध रेडियोधर्मिता, अकाल और जनसंख्या, संसाधनों की कमी, शुद्धवायु आदि प्रमुख है। लेकिन फिर भी जीवन बेहतर हुआ है। कई घोषणाएं विफल हुई हैं। 1970 के दशक में अमरीकी पत्रिका लाईफ ने लिखा था कि लोगों ने को मास्क पहनकर निकलना पड़ेगा। कुछ पत्रिकाओं ने घोषणा की थी कि लोग रेडियेशन से लोगों की मृत्यु हो जाएगी। अनेक जन्मजात विकृतियां बढ़ जाएगी लेकिन स्थितियां सामान्य है।

एक समय में दुनिया की जनसंख्या स्थिर हो जाएगी और खाद्यान्नों का उत्पादन भी बढ़ रहा है। तकनीकों के कारण पृथ्वी का जीवन भी बढ़ रहा है। उर्जा की निपुणता भी बढ़ती जा रही है। ईधन भी बढ़ रहा है। उर्जा का हम अधिक बेहतर तरीके से उपयोग कर रहे हैं। जेनेटिक इंजीनियरिंग ने जीवन को और भी आसान बनाया है। चंद्रमा पर जाने पर लोगों ने उसका भी विरोध किया था लेकिन आज सैटेलाइट और उपग्रह पद्धति ने हमारे संचार को आसान बनाया है। टेक्नोलॉजी का उपयोग शुरूआत में समझ नहीं आता है। लेकिन बाद में उसकी उपयोगिता जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाती है।